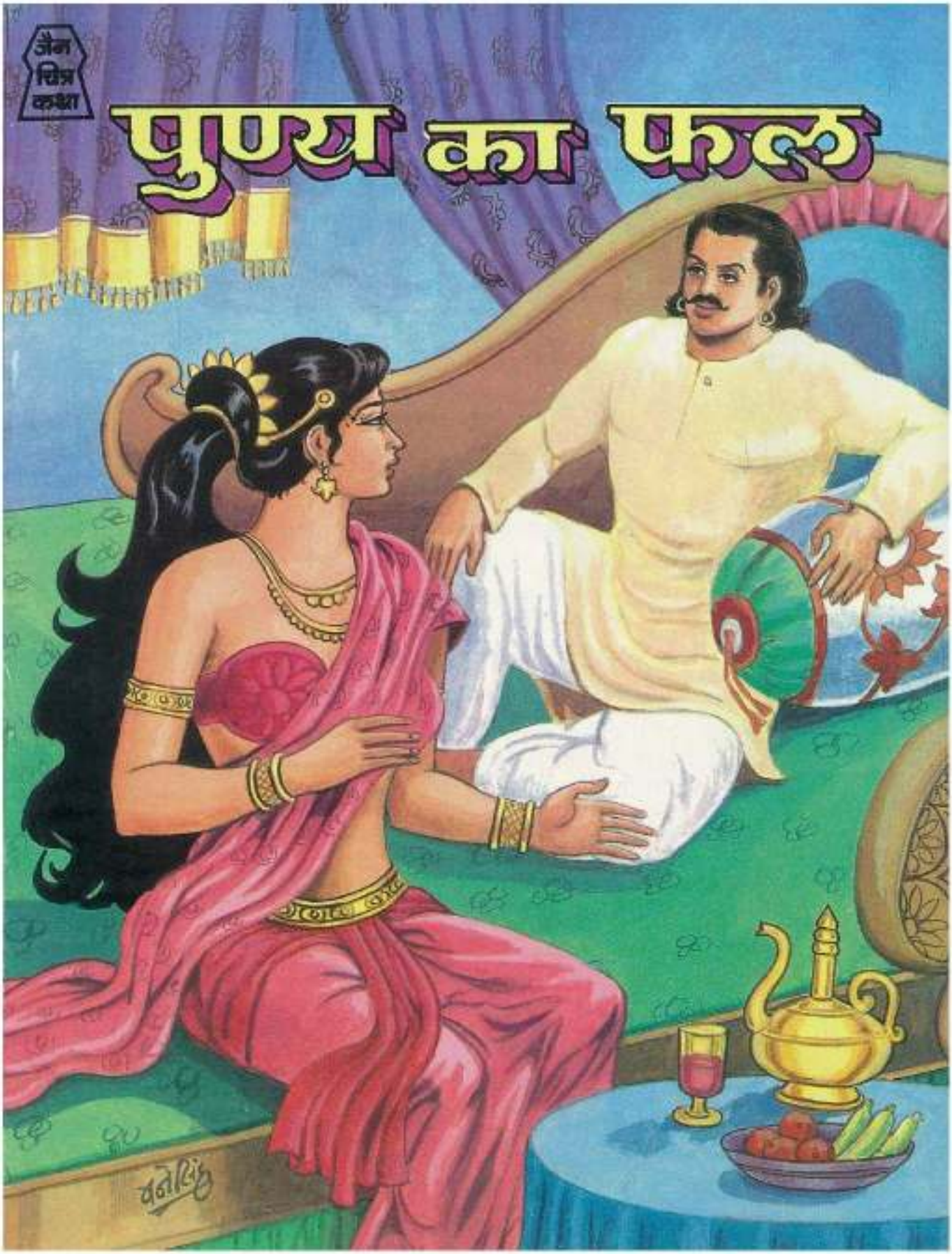

जैन
चित्र
कथा
पुण्य का फल

सम्पादकीय

मानव का जीवन नदी की धारा की तरह है। कभी तेज गति कभी मन्द गति, कभी उतार कभी चढ़ाव। कभी सरल सीधी चाल कभी सर्प की तरह वक्र गति, सुख, दुख, पुण्य, पाप, हर्ष, विशाद का धूप छांही खेल ही जीवन का क्रम है।

जो इस खेल में खिलाड़ी की तरह स्वस्थ मन, स्वस्थ चित बना कर खेलता है उसका जीवन सफल हो जाता है। पुण्य पाप में व्यक्ति दुःखी, सुखी होता है। आज का मानव धीरज खो बैठा है प्रतीक्षा नहीं करना चाहता वह तो तुरन्त फल चाहता है।

मानव को अच्छे कार्य करने चाहिए जिससे स्वयं सुख की अनुभूति कर सके तथा दूसरे की सुख की अनुभूति करेगा तो पुण्य को प्राप्त करेगा।

जैन चित्र कथाएं

जैन चित्र कथा

आशीर्वाद

परम पूज्या गणिनी सुपार्श्वमती माता जी

प्रकाशक	:	आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला
कृति	:	पुण्य का फल
©	:	सर्वाधिकार सुरक्षित
सम्पादक	:	ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य
शब्दाकन	:	ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य
पुष्प नं	:	**42**
मूल्य	:	**20.00**
प्राप्ति स्थान	:	जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड़ जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
☎	:	**914-600074**
		S.T.D. 0575-4600074


राजगृह में धनमित्र नाम का एक सेठ रहता था। उसकी पत्नी का नाम धारिणी था।
पुण्य का फल
चित्र - बनेसिंह
जी.एस. राजावत
विजय, गीताश्री
अक्षर- शारदा
उसके एक पुत्र था - दत्त।
इसी प्रकार भूमिगृह नामक नगर में आनन्द नामक एक गृहस्थ रहता था। उसकी पत्नी का नाम मित्रवती था
इनकी कन्या का नाम वीरवती था, जो अत्यन्त सुन्दर थी।

धनमित्र के बेटे दत्त का विवाह वीरवती के साथ हुआ।

कुछ समय बाद दत्त रत्नद्वीप में व्यापार करने चला गया।

वीरवती अपने माता-पिता के घर रहती थी।

यहां मारक नामक एक चोर रहता था। वह अत्यन्त सुन्दर था।



तारक और वीरवती अक्सर मिलने लगे।

कुछ समय बाद सेठ दत्त रत्नद्वीप से धन कमाकर लौटा।





मैंने इतना धन कमाया है। इसमें से कुछ लाभ उसे भी दूँगा। वह अवश्य मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी।

सेठ दत्त को रास्ते में एक जंगल पड़ा।

इस जंगल में सहस्रभट नामक एक चोर रहता था।

सेठ दत्त उस जंगल से गुजरा तो सहस्रभट ने उसे देख लिया।

ये कोई सेठ है। इसके पास अवश्य ही धन होगा। मुझे इसका पीछा करना चाहिए।

सहस्रभट चोर, सेठ दत्त के पीछे पीछे छिपकर चलने लगा।


सार्थवाह पीछा करते-करते नगर में आ गया पर सेठ दत्त को लूटने का मौका न मिला।
इतने बड़े सेठ को यूं ही नहीं छोड़ूंगा। इस पर नजर रखनी होगी कभी न कभी तो मौका मिलेगा।
सेठ दत्त अपनी ससुराल पहुंचा। वहां उसका खूब स्वागत हुआ।
तो ये अपनी ससुराल आया है। चलो, कभी तो अपने घर आयेगा-तब ढेरवूंगा। किन्तु घर में भी तो मौका मिल सकता है। क्यों न इस पर यहीं से नजर रखूं?


सेठ दत्त से वीरवती भी बड़ी प्रसन्नता से मिली।
कितने दिन लगा दिए नाथ, परदेश में?
बस धंधा चल रहा था, सो रुकना पड़ा।
अचानक वीरवती का चेहरा उदास हो गया।
क्या बात है वीरवती? तुम उदास क्यों हो गयीं? मेरे आने से प्रसन्न नहीं हुई?
नहीं तो।
देखो! तुम्हारे लिए कितने बहुमूल्य रत्न लाया हूँ। इन्हें पहनने से तुम और सुन्दर लगोगी।
किन्तु वीरवती के मन में तो कोई और ही दुख था।
अरे! इतने सुन्दर रत्न पाकर भी तुम प्रसन्न नहीं हुई!

वीरवती ने नकली मुस्कान दिखाकर सेठ दत्त को समझा दिया कि वह प्रसन्न है।

वीरवती के नकली व्यवहार से सेठ दत्त प्रसन्न हो गया। उसे क्या पता था कि वीरवती के मन में कौन सा दुख है।

वीरवती के दुख का कारण था- शारक चोर, जिससे वह प्रेम करती थी। शारक एक रात चोरी करते पकड़ा गया।

अगले दिन राजदरबार में-

महाराज की जय हो! हमने आज शारक चोर को पकड़ लिया है। ये बड़ा ही चतुर चोर है।


इसने सैकड़ों चोरियां की हैं, हत्या की है। अब तक ये हमारी आंखों में धूल झोंककर भागता रहा।
किन्तु आज ये चन्दन सेठ के घर में घुसा। उनके पहरेदारों ने ललकारा तो ये भागा। तभी हमारे सिपाही उधर से निकले।
हमारे सिपाहियों ने इसे दबोच लिया। इसकी हमें बहुत दिनों से खोज थी। आज इसे हमने पकड़ा है।
महाराज। ये बड़ा ही खतरनाक चोर है। इसे छोड़ा न जाय। इसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाय।
ठीक है। इसे प्राण दण्ड दिया जाता है। इसे सूली पर चढ़ा दो।


उधर वीरवती को शारक के पकड़े जाने का दुख था।
सुना! वीरवती! राजा ने शारक को सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया है!
क्या? निर्दयी राजा को तरस न आया कि ऐसे ताकतवर, जवान आदमी को सूली पर चढ़ा रहे हैं!
तू किसी तरह उससे मिल ले।
पर कैसे सखि! राजा के सिपाही कभी न मिलने देंगे।
तू कहना, मैं इसकी पत्नी हूं।


लेकिन मैं जिसकी पत्नी हूं, वो सेठ दत्त भी आज ही आ गया है। उसे भी आज ही आना था! ईह
सेठ दत्त की परवाह क्यों करती है। उसे तो तूने पहले ही वश में कर रखा है। वो कभी तेरे बारे में सन्देह न करेगा।


वीरमती सारे दिन विचलित रही।
तुम कुछ परेशान हो क्या?


क्या हो गया है आपको? जबसे आए हैं- यही पूछे जा रहे हैं कि परेशान हो, उदास हो ... क्या करूं, मेरा चेहरा ही ऐसा है।


यह हाल देखकर सेठ दत्त चुप हो गया।
नाराज न हो! ठीक है, जो हो सके वही करो।


अधर रात होते ही कामरू को सूली पर चढ़ा दिया गया।
हाय! कैसे सब लोग सोये और मैं अपने प्रेमी के शव से जाकर लिपट जाऊं


आधी रात हुई...
अरे ! यह मैं क्या देख रहा हूँ? अपने पति को छोड़कर तलवार लिए वह कहां जा रही है?
मुझे इस रहस्य का पता लगाने के लिए इसके पीछे चलना होगा।
आगे-आगे चलने वाली वीरवती ने लगा कि कोई पीछा कर रहा है।
वीरवती को लगा कि कोई पीछे आ रहा है।
कौन है? पर यहां तो कोई नहीं है।
अचानक वीरवती ने पीछे की ओर करके तलवार चला दी, जिससे पीछे आ रहे सशस्त्र चोर की उंगलियां कट गयीं, पर उसने उफ तक न की

वीरवती को फिर संदेह हुआ कि कोई आ रहा है, किन्तु अन्धेरे में कुछ भी न देख सकी

वीरवती फिर अंधेरे में आगे बढ़ी तो चलते ही रामशान था जहाँ तारक को सूली पर चढ़ाया गया था।

वीरवती सूली पर चढ़े तारक के पास पहुंची तो देखा कि वह

अभी जिन्दा है, कुछ सांस बाकी है।

अरे! ये तो पलक झपका रहा है। ये तो जिन्दा है। मुझे तुरन्त इसे बैठाने का प्रयत्न करना चाहिए।

नहीं प्रिये! मुझे बचाने का प्रयत्न व्यर्थ जायेगा। समय नष्ट न करो। मैं कुछ ही पल का मेहमान हूं। मेरी तुम्हारी यह अंतिम भेंट है


एक पेड़ के पीछे छिपा सहसभट यह दृश्य देख रहा था।
देर मत करो प्रिये! आओ, अपने मुख का पान मुझे दो और सुखी बनाओ।
किंतु मारक तो सूली पर, अधर था। वहाँ वीरवती कैसे पहुंचे? तब वीरवती ने वहाँ पड़े मुर्दों को इकट्ठा कर एक के ऊपर एक रखा
अब वह मुर्दों पर चढ़कर मारक के मुख के पास पहुंच गयी। मारक के


अचानक एक मुर्दा लुढ़का और वीरवती गिर गयी। किंतु उसके होठ कट गए।
अपने कटे हुए होठों वाले मुंह को कपड़े से छिपाकर वीरवती वहां से भागी।
सहस्रभट चोर फिर उसका पीछा करने लगा।
वीरवती घर आयी और अपने पति के पास खड़ी होकर चिल्लाने लगी।
दौड़ो-दौड़ो इस पापी ने मेरे होठ काट लिए।

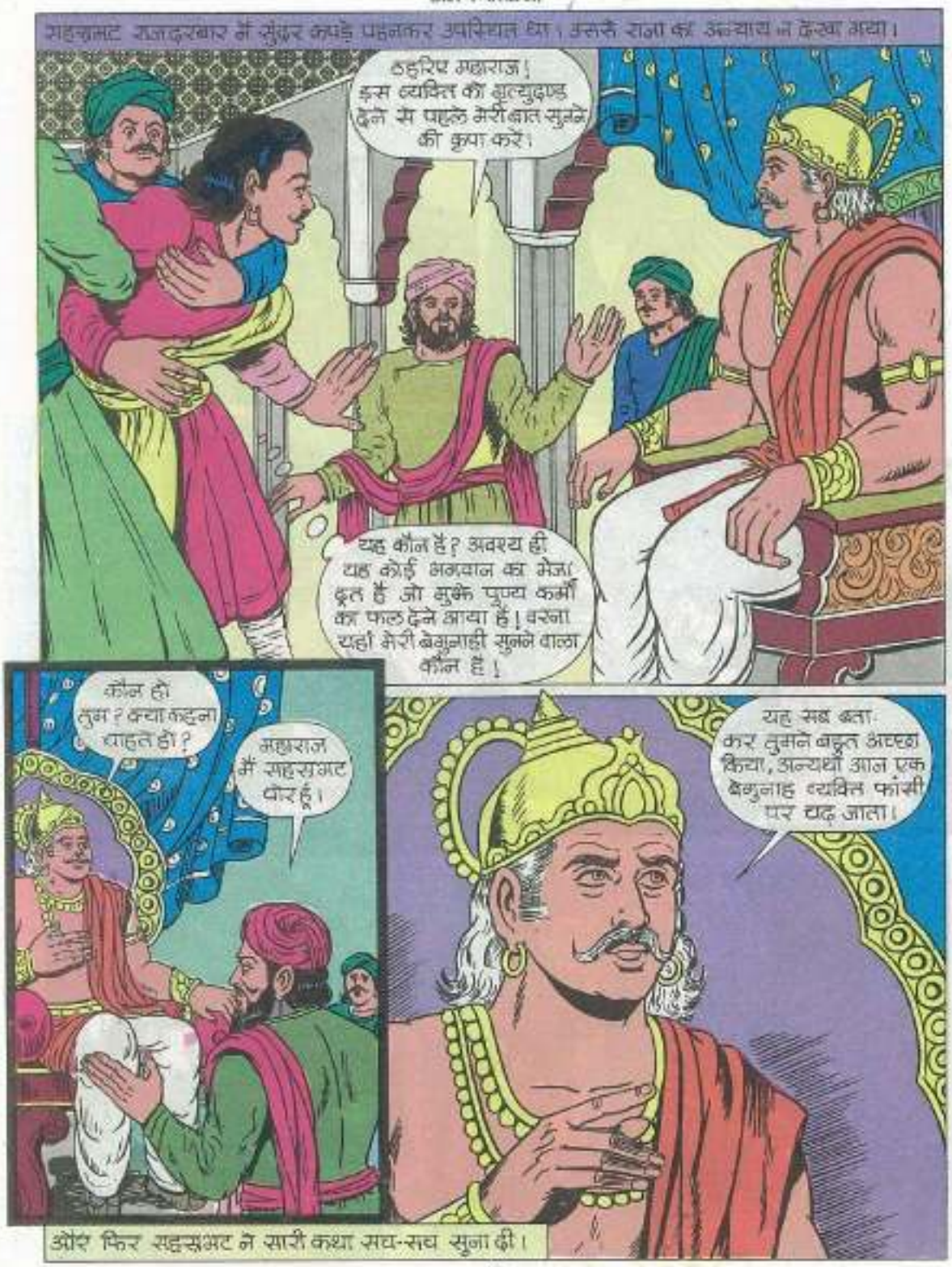


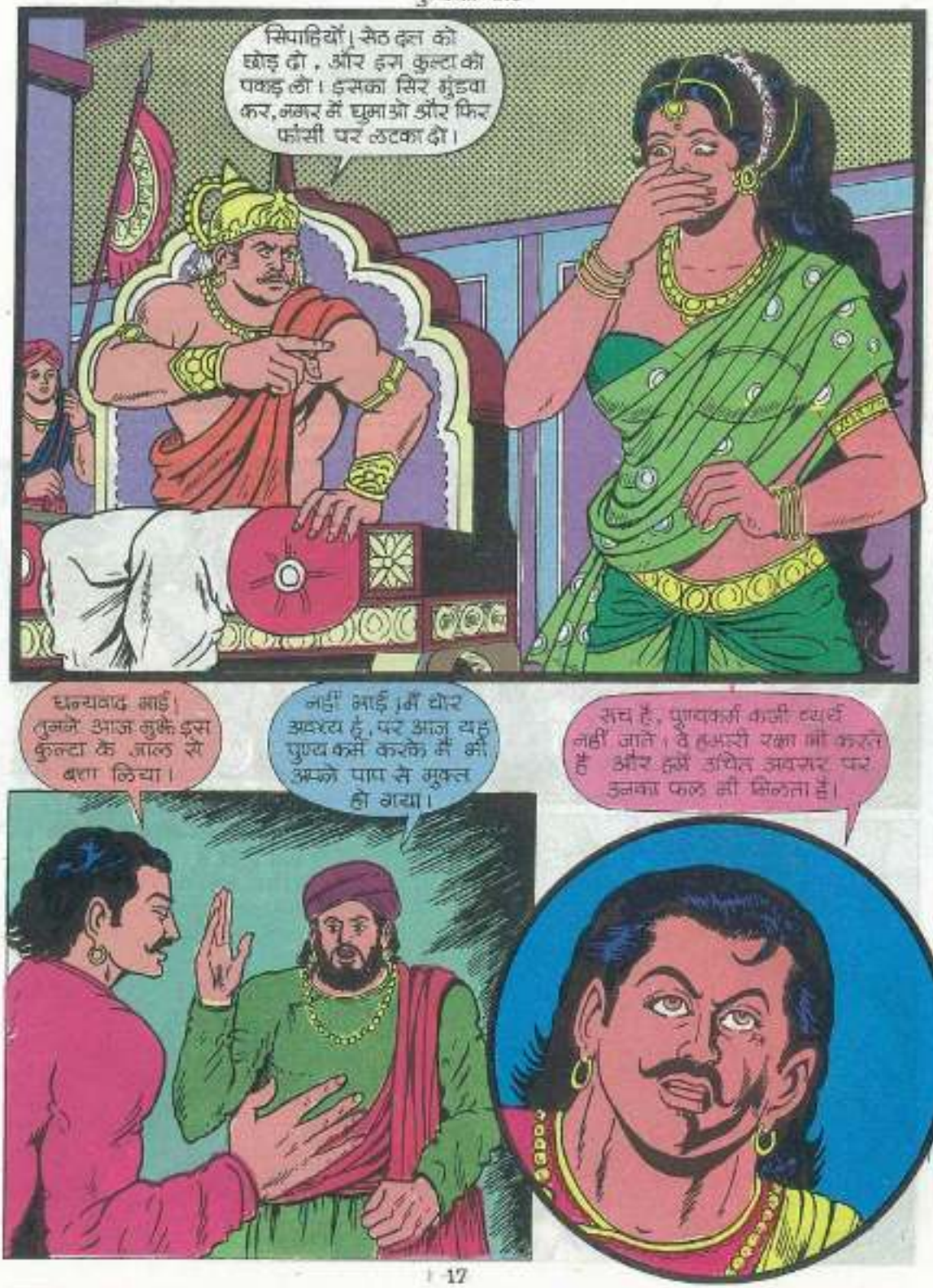
आवेश होने पर सेठ दत्त को राजा के सामने पेश किया गया।








सहस्रभट राजदरबार में सुंदर कपड़े पहनकर उपस्थित था। उसने राजा का अन्याय न देखा गया।
ठहरिए महाराज! इस व्यक्ति को मृत्युदण्ड देने से पहले मेरी बात सुनने की कृपा करें।
यह कौन है? अवश्य ही यह कोई भगवान का भेजा दूत है जो मुझे पुण्य कर्मों का फल देने आया है! वरना यहाँ मेरी बेगुनाही सुनने वाला कौन है!
कौन हो तुम? क्या कहना चाहते हो?
महाराज, मैं सहस्रभट चोर हूँ।
यह सब करा कर तुमने बहुत अच्छा किया, अन्यथा आज एक बेगुनाह व्यक्ति फांसी पर चढ़ जाता।
और फिर सहस्रभट ने सारी कथा सच-सच सुना दी।


सिपाहियों! सेठ दत्त को छोड़ दो, और इस कुत्ते को पकड़ लो। इसका सिर मुंडवा कर, नगर में घुमाओ और फिर फांसी पर लटका दो।
धन्यवाद भाई! तुमने आज मुझे इस कुत्ते के जाल से बचा लिया।
नहीं भाई! मैं चोर अवश्य हूं, पर आज यह पुण्य कर्म करके मैं भी अपने पाप से मुक्त हो गया।
सच है, पुण्यकर्म कभी व्यर्थ नहीं जाते। वे हमारी रक्षा भी करते हैं और हमें उचित अवसर पर उनका फल भी मिलता है।

अभयदान की कथा

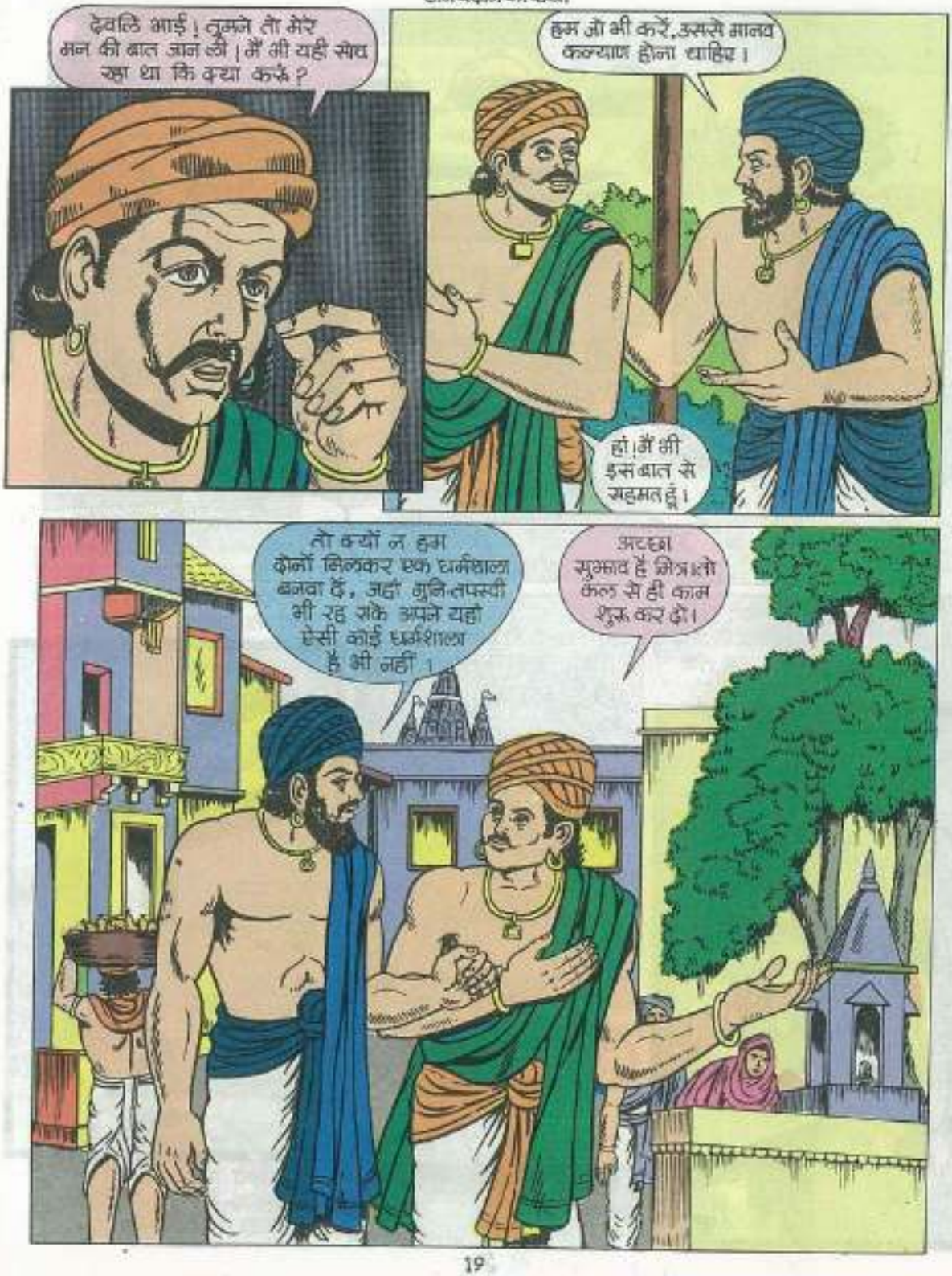
मालवा में घटगांव नामक एक समृद्ध नगर था।

और धर्मिल नामक एक नाई रहता था।

यहां देवलि नामक एक कुम्हार रहता था।

एक दिन...

भाई धर्मिल! मैंने मिट्टी के बर्तन बेच-बेचकर बहुत धन कमा लिया है। सोचता हूँ उसे किसी अच्छे कार्य में लगाऊँ।


देवलि भाई! तुमने तो मेरे मन की बात जान ली! मैं भी यही सोच रहा था कि क्या करूँ?
हम जो भी करें, उससे मानव कल्याण होना चाहिए।
हां! मैं भी इस बात से सहमत हूँ।
तो क्यों न हम दोनों मिलकर एक धर्मशाला बनवा दें, जहाँ मुनि-तपस्वी भी रह सके अपने यहाँ ऐसी कोई धर्मशाला है भी नहीं।
अरे! सुझाव है मित्र! तो कल से ही काम शुरू कर दो।

देवलि और धर्मिल के प्रयत्नों से कुछ ही दिनों में वहां एक सुन्दर धर्मशाला बनकर तैयार हो गयी।

एक दिन...

आइये मुनिराज। इस धर्मशाला में आप विश्राम करें और जब तक जी चाहे, यहां रहें।

मुनिराज धर्मशाला में रह कर पूजा-तप करने लगे।

फिर एक दिन धर्मिल एक साधु को लेकर आया।

आइये साधु महाराज। आप यहां मेरी बनवाई धर्मशाला में विश्राम करें।

किंतु जब धर्मिल ने वहां मुनिराज को देखा तो उसको बड़ा क्रोध आया।

मुनीम जी! आपने किसकी अनुमति से इस कमरे में मुनि को ठहराया है?

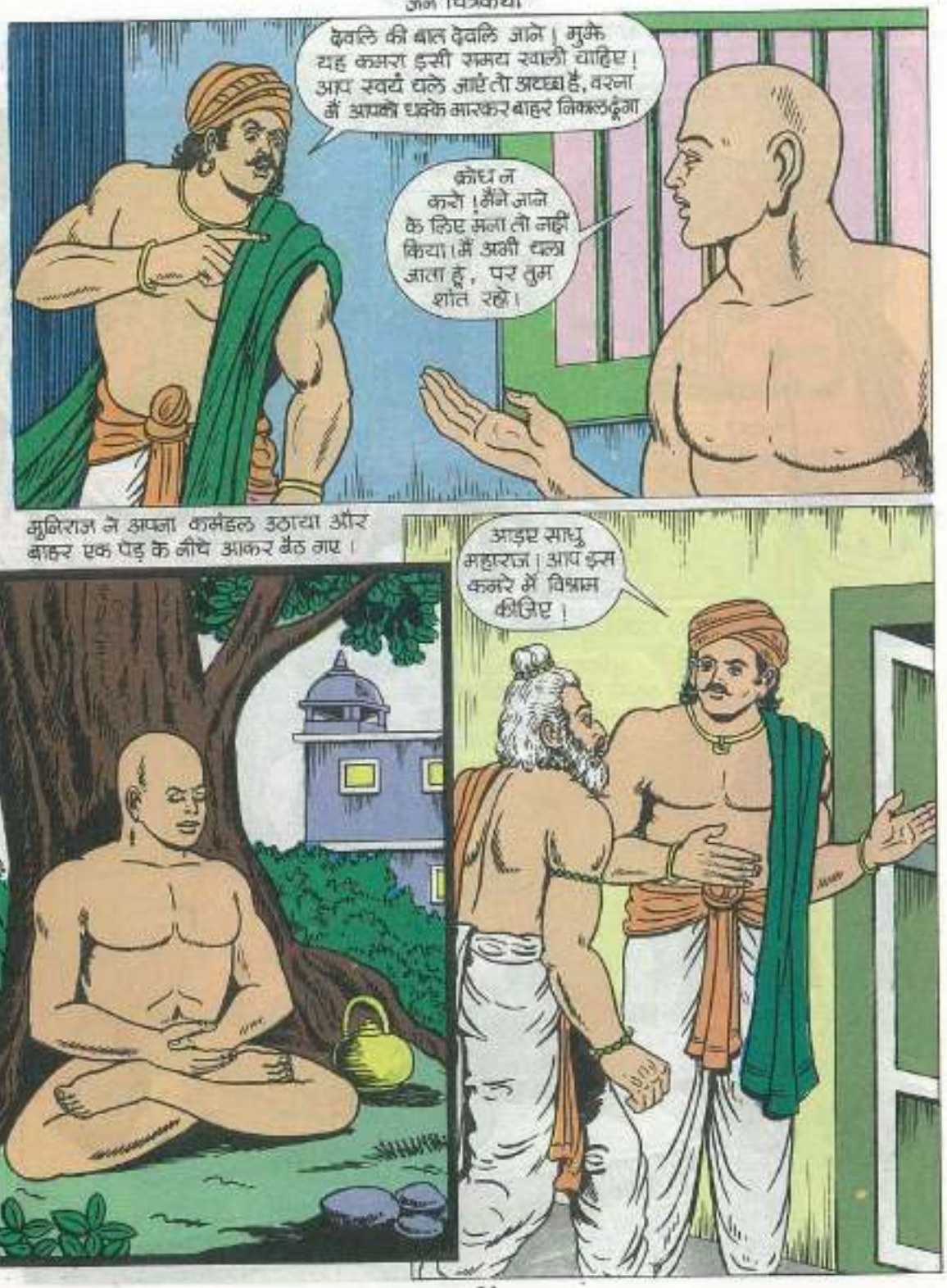
मैंने नहीं! ये तो देवलि जी ने मुनिराज को यहां ठहराया है। मेरे लिए तो आप दोनों ही धर्मशाला के मालिक हैं। मैं उन्हें कैसे रोक सकता था?

नहीं! धर्मशाला में, मेरी अनुमति के बिना कोई नहीं ठहर सकता। देवलि कौन होता है?

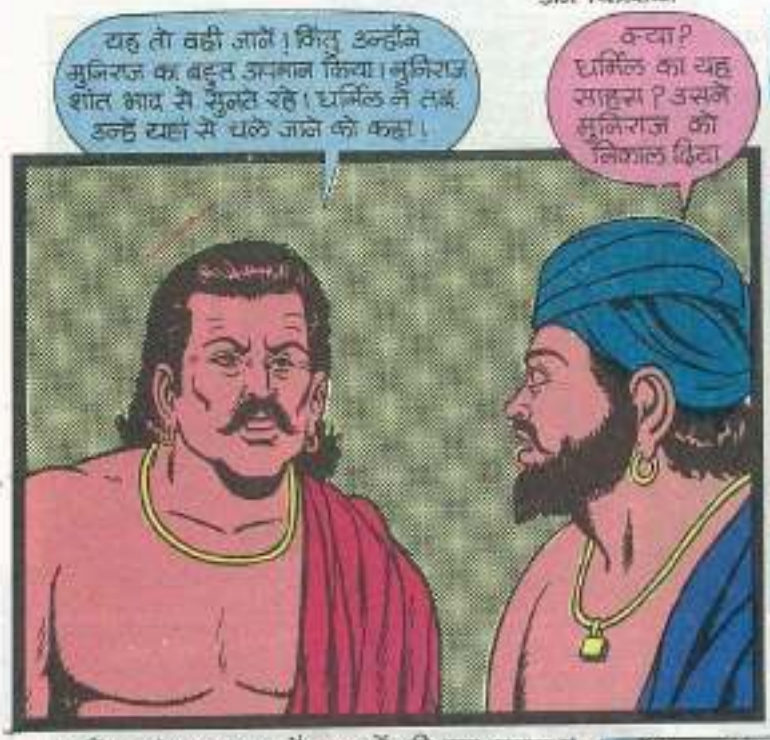
इसके बाद गुस्से से भरा हुआ धर्मिल मुनिराज के पास आया।

मुनिराज! आपको यहां ठहरने का कोई अधिकार नहीं है। आप कृपा कर यहां से इसी समय चले जाएं!

किंतु... देवलि।


देवलि की बात देवलि जाने। मुझे यह कमरा इसी समय खाली चाहिए। आप स्वयं चले जाएं तो अच्छा है, वरना मैं आपको धक्के मारकर बाहर निकलवा दूंगा
क्रोध न करो! मैंने जाने के लिए मना तो नहीं किया। मैं अभी चला जाता हूं, पर तुम शांत रहो।
मुनिराज ने अपना कमंडल उठाया और बाहर एक पेड़ के नीचे आकर बैठ गए।
आइए साधु महाराज। आप इस कमरे में विश्राम कीजिए।


मुनिराज पेड़ के नीचे बैठे रहे। रात में उन्हें मच्छरों ने बहुत काटा, पर वह शांत भाव से सब सहन करते रहे।
सवेरे देवलि धर्मशाला में आया तो मुनिराज को न देखकर परेशान हुआ।
मुनिराज कहां गए? कहीं वह नाराज होकर चले तो नहीं गए। पर ऐसा संभव नहीं लगता।
तभी मुनीम जी आए---
मुनीम जी! कल जो मुनिराज यहां ठहरे थे, वह अचानक कहां चले गए?
स्वामी! क्या कहूं? मेरे लिए तो आप भी स्वामी हैं और धर्मिल भी। कल शाम धर्मिल जी एक साधु के साथ आए थे। वह मुनिराज को देखकर बहुत क्रोधित हुए!
लेकिन क्यों?

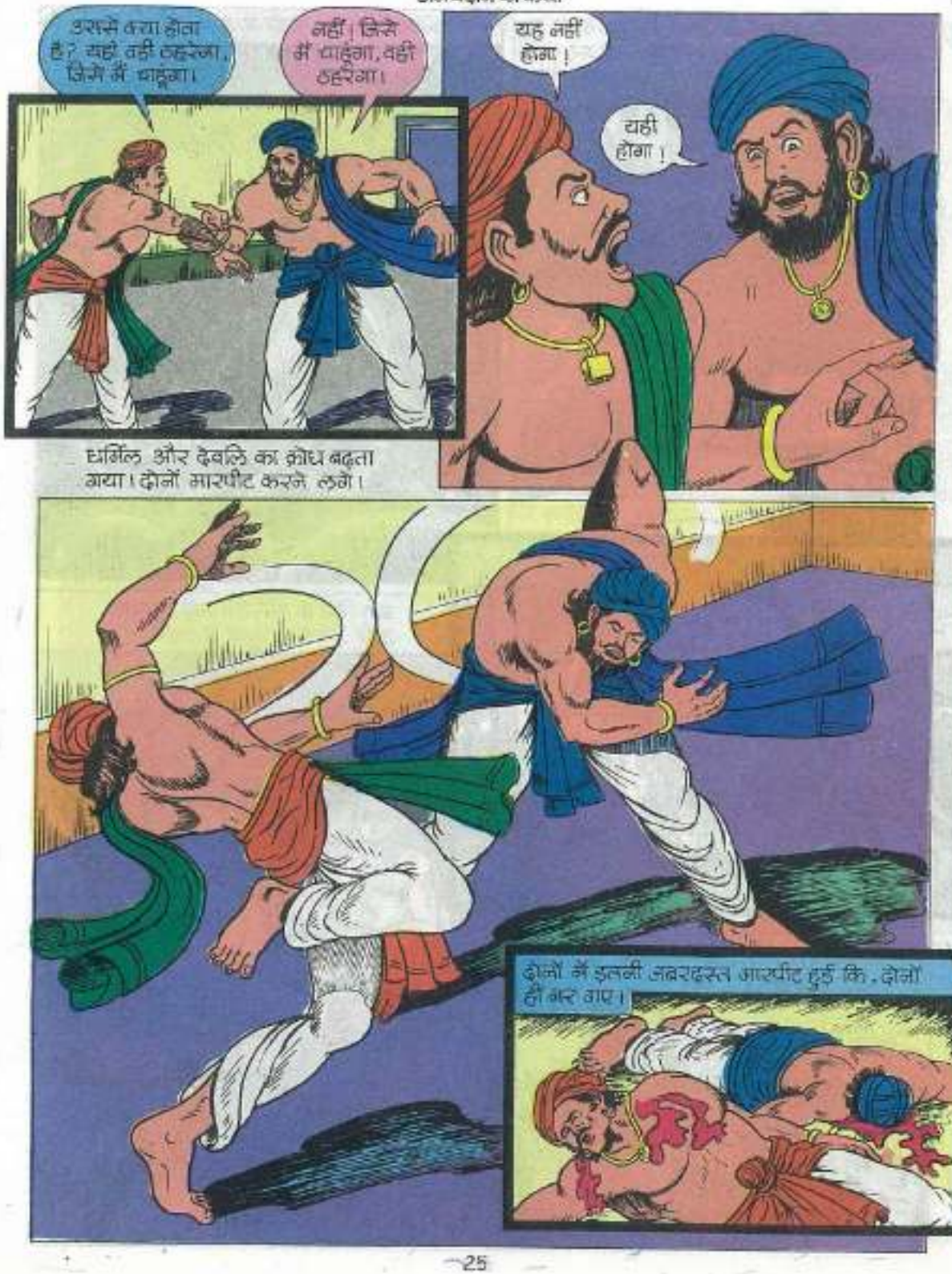


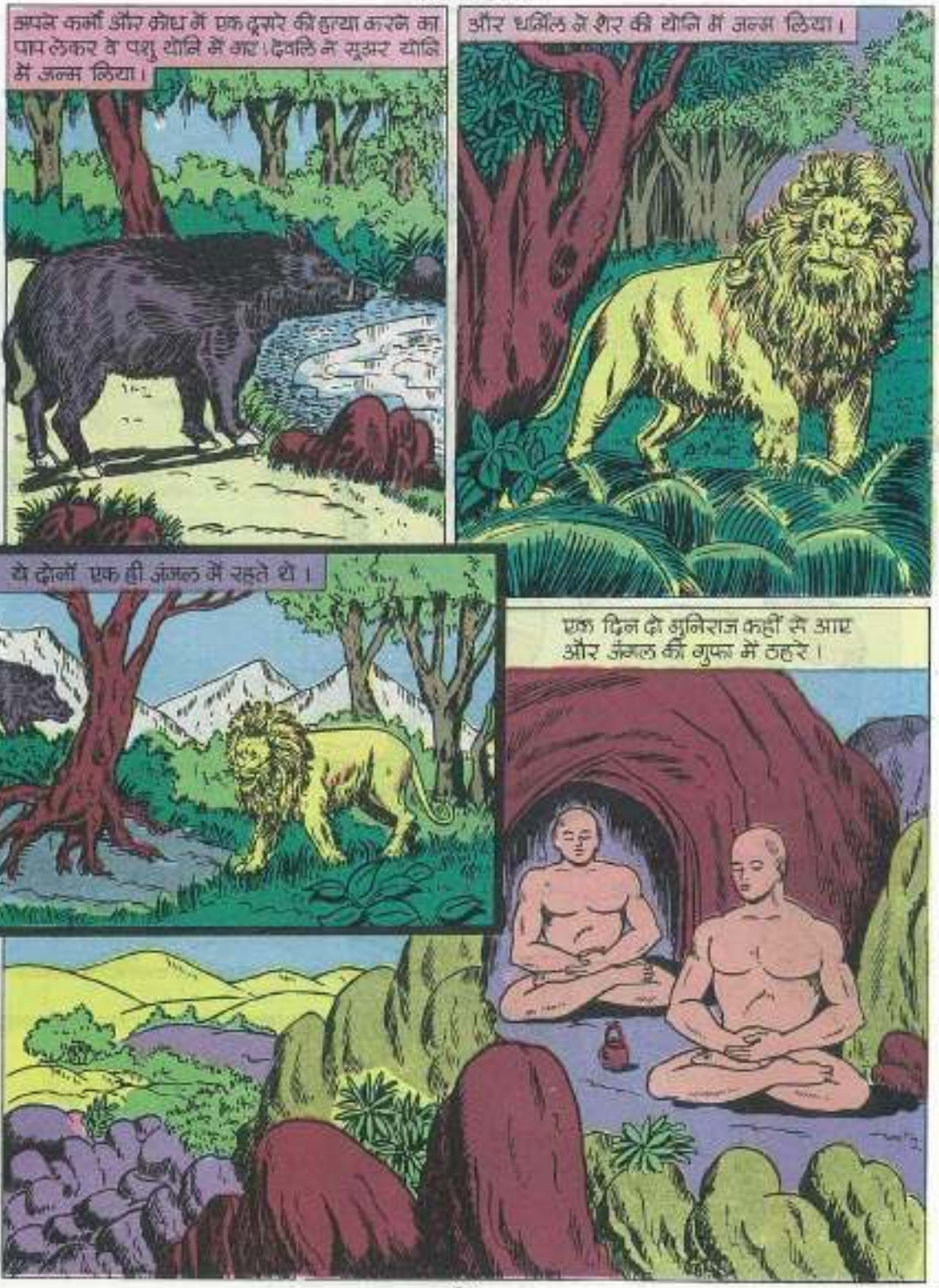


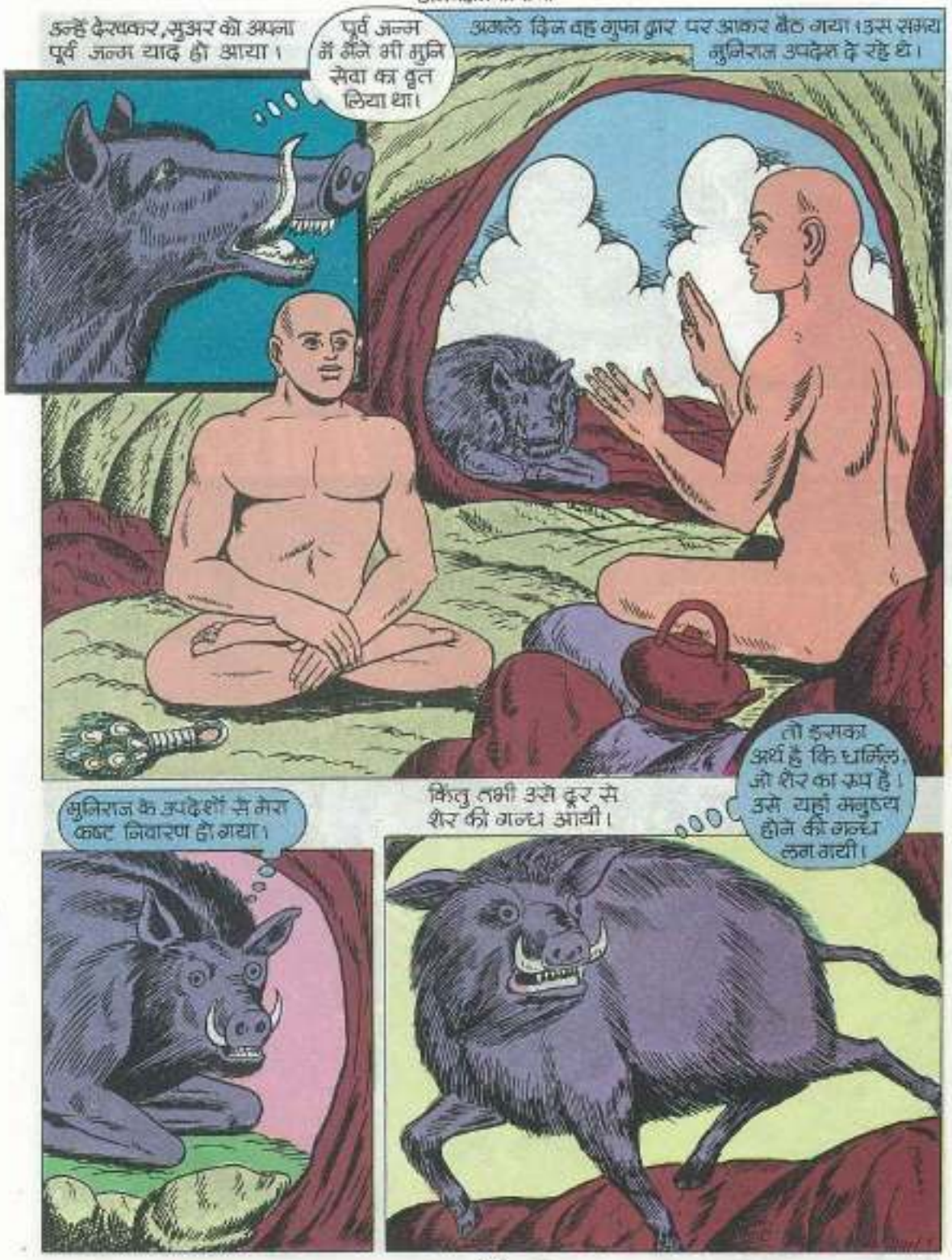
मुनिराज के अपमान और कष्टों की बात सुनकर देवलि क्रोध से भर गया। तभी धर्मिल आ गया।






उससे क्या होता है? यहीं, वहीं ठहरना, जिसे मैं चाहूंगा।
नहीं! जिसे मैं चाहूंगा, वहीं ठहरेगा।
यह नहीं होगा!
यही होगा!
धर्मिल और देवलि का क्रोध बढ़ता गया। दोनों मारपीट करने लगे।
दोनों में इतनी जबरदस्त मारपीट हुई कि, दोनों ही मर गए।


अपने कर्मों और क्रोध में एक दूसरे की हत्या करने का पाप लेकर वे पशु योनि में गए। धम्मिल ने सूअर योनि में जन्म लिया।
और धम्मिल ने शेर की योनि में जन्म लिया।
ये दोनों एक ही जंगल में रहते थे।
एक दिन दो मुनिराज कहीं से आए और जंगल की गुफा में ठहरे।


उन्हें देखकर, सुअर को अपना पूर्व जन्म याद हो आया।
पूर्व जन्म में मैंने भी मुनि सेवा का व्रत लिया था।
अगले दिन वह गुफा द्वार पर आकर बैठ गया। उस समय मुनिराज उपदेश दे रहे थे।
तो इसका अर्थ है कि धर्मिल, जो शेर का रूप है। उसे यहां मनुष्य होने की गन्ध लग गयी।
किंतु तभी उसे दूर से शेर की गन्ध आयी।
मुनिराज के उपदेशों से मेरा कष्ट निवारण हो गया।


जो भी हो ! मुझे इन मुनियों की रक्षा तो करनी ही है।
उधर मनुष्य की गंध पाकर दहाड़ता हुआ शेर चला आ रहा था।
सुअर, मुनियों की रक्षा करना चाहता था और शेर उन्हें खाना चाहता था।
दोनों मुनि शांतभाव से तप करते रहे।



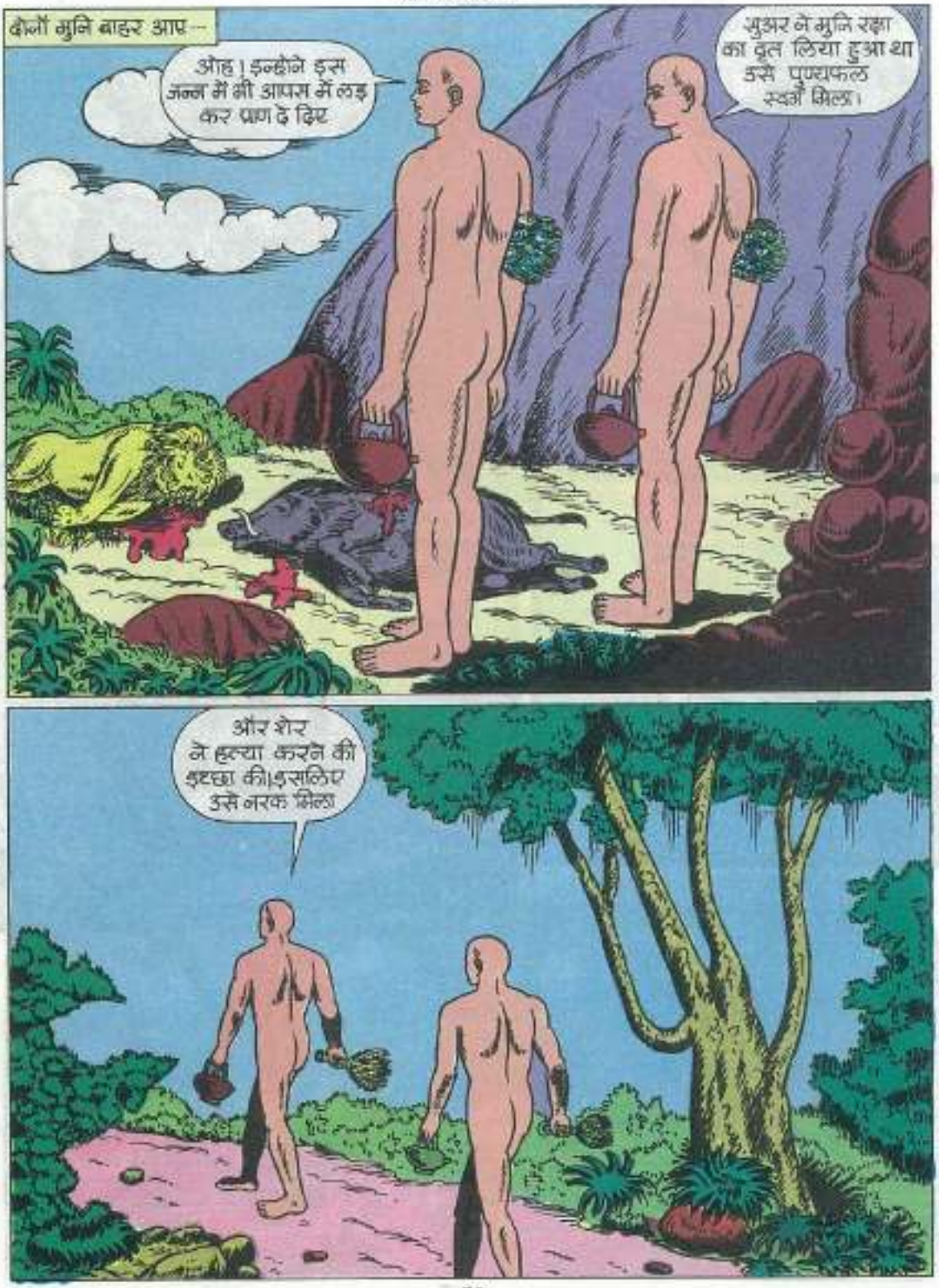


किंतु शेर फिर झपटा और दोनों में युद्ध शुरू हो गया।



अंत में दोनों ने प्राण त्याग दिए।




दोनों मुनि बाहर आए --
ओह! इन्होंने इस जन्म में भी आपस में लड़ कर प्राण दे दिए
सुअर ने मुनि रक्षा का व्रत लिया हुआ था उसे पुण्यफल स्वर्ग मिला।
और शेर ने हत्या करने की इच्छा की।इसलिए उसे नरक मिला

आपके परिवार के लिए अति ही उपयोगी साहित्य

जैन चित्र कथा की प्रकाशित कृतियां

१. तीन दिन में	१०
२. भाग्य की परीक्षा	१०
३. त्याग और प्रतिज्ञा	१०
४. आटे का मुर्गा	१०
५. करें सो भरें	१२
६. कवि रत्नाकर	१०
७. चमत्कार	१२
८. प्रद्युमन हरण	१२
९. सत्यघोस	१२
१०. सात कोडियों में राज्य	१२
११. टीले वाले बाबा	१२
१२. चन्दनबाला	१२
१३. ताली एक हाथ से बजती रही	१२
१४. सिकन्दर और कल्याण मुनि	१२
१५. चरित्र चक्रवती	१२
१६. रूप जो बदला नहीं जा सकता	१२
१७. राजुल	१२
१८. स्वर्ग की सीढ़ी	१२
१९. मुनिरक्षा	१२
२०. मुक्ति की राही	१२
२१. महादानी भामाशाह	१२
२२. प्रतिशोध	१२
२३. अभय 'कुमार	१२
२४. चेलना की विजय	१२
२५. पद्मावती देवी	१२
२६. गाये जा गीत अपन के	१२
२७. बाहुवली	२०
२८. पारसनाथ	२०
२९. भावना का फल	२०
३०. भगवान राम	२५
३१. आओं बच्चों गाये गीत	२५

सुनो सुनाएं सत्य कथाएं
अनमोल कथाओं का प्रकाशन

१. भगवान मल्लिनाथ	२०
२. महाबली बरांग भाग–एक	२०
३. महाबली बरांग भाग–दो	२०
४. तीर्थ कर विमल नाथ	२०
५. जीवन्धर का राज्य पद	२०
६. कुमार जिनदत्त	२०
७. पांच पाण्डव	२०
८. पाण्डवों का अज्ञात वास	२०
९. बरांग	२०
१०. बरांगी की जीत	२०
११. शकाहार का माहत्म्य	२०
१२. अहिंसा की जीत	२०
१३. अदि ब्रह्मा भाग–१,२,३,४	२०
१४. भगवान पार्श्वनाथ	२०
१५. भावना का फल	२०
१६. भगवान राम	२०
१७. बाहुबली	२०
१८. सत्यत्व कथा	२०
१९. दान का फल	२०
२०. नन्हें मुन्नों के गीत	२०

जैन चित्र कथा के आगामी प्रकाशन

१. आदिनाथ १५
२. अनोखा त्याग १५
३. चारुदत्त १५
४. मृगावती १५
५. नेमीनाथ १५
६. बिम्बसार की विजय १५
७. स्वर्ग तेरे आगन में १५
८. संजयन्त मुनि १५
९. तीर्थंकर ऋषभदेव १५
१०. आचार्य कुन्द कुन्द १५
११. नाग कुमार १५
१२. अकलंक स्वामी १५
१३. जीवन का रहस्य १५
१४. मृगसैन धीवर १५
१५ जीवन्धर स्वामी १५
१६. रेवतीरानी और प्रतिकर मुनि १५
१७. बजसैन १५
१८ जम्बू कुमार १५
१९. देवी अंजना १५
२०. चारित्र ही मंन्दिर १५
२१. महावली बरांग भाग एक १५
२२. महाबली बरांग भाग दो १५
२३. बेताल गुफा १५
२४. तीसार नेत्र १५
२५. हरिषेण चक्रवर्ती १५
२६. नारद और पर्वत १५
२७. सम्राट बिम्बसार १५
२८. केरल की राजकुमारी १५
२९. पुण्य का फल १५
३०. सोलह कारण भावना १५
३१. दशलक्षण पर्व १५
३२. क्षमा दान १५
३३. क्रोध का फल
३४. महासत्ती नीली
३५. सुकौशल मुनि
३६. सुभौम चक्रवर्ती
३७. राजा सगर
३८. राजा का नगर प्रवेश
३९. एक चोर
४०. नारी की शक्ति
४१. सम्राट चन्द्रगुप्त
४२. अमृतफल
४३. अनोखा चोर
४४. आचार्य विधासागर
४५. आचार्य परम्परा
४६. आचार्य संमतभद्र स्वामी
४७. तीर्थराज सम्मेदशिखर
४८. बाड़ा के बाबा
४९. महाराज श्रेणिक
५०. दान का फल
५१. मनुष्य की कीमत
५२. आचार्य माघनन्दि
५३. धूले वा– (केशरयानाथ)
५४. अन्तरिक्ष पारसनाथ
५५. बर्तनों की बाबड़ी
५६. सोने का पर्वत
५७. गजकुमार मुनि
५८. कमल श्री
५९. साधना का फल
६०. धन का लोभी
६१. सोने की ईंटें
६२. एक रात में परिवर्तन
६३. सीमंधर स्वामी
६४. रोट का फल
६५. मुनि निन्दा का फल
६६. खांपड़ी को ठोकर
६७. चमत्कार का फल–लालप मंन्दिर
६८. तिरवाल वाले बाबा
६९.मोतियों का दान
७०. पानी में मीन प्यासी
७१. सिहंद्वार

आप से कुछ कहूँ

जैन आगम साहित्य प्रथमानुयोग में, संसार की श्रेष्ठ कहानियाँ का अक्षय भंडार भरा है। चारित्रता, नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, विनयगुण, धैर्य, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता, व्रत उपवास तपस्या आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर शिक्षाप्रद रोचक कहानियों में से चुन चुन कर सरल भाषा शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का सर्व प्रथम प्रयास हमने किया था जो काफी प्रगृति पर है।

जैन चित्र कथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही साथ ही इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन और जीवन मूल्यों से आपका सीधा सम्पर्क होगा।

निवेदक

प्रकाशक आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला

जैन चित्र कथा

आप पढ़े तथा दूसरों को पढ़ाये



श्री आर्यिका गणिनी सुपार्श्वमति माता जी



ब्र० धर्मचंद शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य

सान्निध्य

श्री गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माता जी 21 अप्रेल 2000 को डेह राजस्थान में आर्यिका इन्दूमति माता जी द्वारा स्थापित पदमप्रभु-चैत्यालय का नवीनी करण एव वेदी शुद्धि के पुण्य अवसर पर प्रकाशित

द्वारा - पुखराज जी जैन

Produced & Printed by: Shiva Enterprises, Tel.: 2126502